इकाई 1 समाजशास्त्रीय चिंतन*

संरचना

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 समाजशास्त्रीय पद्धति

1.3 प्रतिदिन के जीवन में समाजशास्त्र

1.3.1 वादा (मिल्स)

1.3.2 बोमन का वन्सेल्फ़ विद अदर्स इन एवरी डे लाइफ़

1.3.3 समूह के भीतर और समूह के बाहर

1.4 समाजशास्त्र और अन्य विषय

1.4.1 व्यावहारिकता के प्रकार और नौकरशाही लोकाचार (मिल्स)

1.4.2 इतिहास का उपयोग (मिल्स)

1.5 वास्तविकता को देखने का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

1.5.1 मानवीय विविधता (मिल्स)

1.6 निरीक्षण, व्याख्या और विधिमान्य करने के लिए समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

1.6.1 समाजशास्त्रीय दृष्टि

1.6.2 विज्ञान का दर्शनशास्त्र (मिल्स)

1.7 सारांश

1.8 संदर्भ

0.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप, निम्न को समझने में सक्षम होंगे :

- समाजशास्त्रीय पद्धतियाँ जिनका उपयोग समाज के विषय में निरीक्षण, व्याख्या और आंकड़ों को विधिमान्य करने के लिए किया जाता है;
- रोज़मर्रा के जीवन की वास्तविकता को देखने का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण;
- समाजशास्त्र की प्रमुख अवधारणाएँ; तथा
- समाजशास्त्र और अन्य विषय।

1.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आप समझ सकेंगे कि समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का क्या अर्थ है। समाजशास्त्री किस प्रकार रोज़मर्रा के जीवन की वास्तविकताओं का निरीक्षण और व्याख्या करते हैं, समाजशास्त्रियों के रूप में यह हमारा प्रमुख मुद्दा है। अनेक विद्वानों ने उस प्रकार के बारे में अपना मत दिया है जिसमें सामाजिक परिप्रेक्ष्य हमारी समाझ को आकार देता है कि किस प्रकार सामाजिक संबंध बनते और स्थिर रहते हैं ।

ज़िग्मंट बॉमन जैसे विद्वान सत्ता को एक प्रमुख रूप में देखते हैं जो सामाजिक संबंधों द्वारा चालित होती है। विभिन्न मानव श्रेणियों और उनके द्वारा किये गए कार्य, जिसे समाज में

* प्रो.(से.नि.) शुभद्रा चन्ना, दि.वि. और वाणी खाखा शोधार्थी, जामिया मिलिया इस्लामिया

सामाजिक स्थिति और भूमिका के रूप में समझा जाता है, उन मूल्यों द्वारा सूचित होते हैं जो कि निर्मित और पोषित दोनों होते है उन लोगों के द्वारा जिनके पास इन मूल्यों का प्रचार-प्रसार करने की शक्ति और संसाधन होते हैं। विषय और विचारों द्वारा प्राप्त अर्थ इन्हीं शक्ति पदानुक्रमों द्वारा सूचित किये जाते हैं।

सी डब्ल्यू मिल्स ने अमेरिकी समाज का अध्ययन किया और समाज को आत्म-निहित के रूप में दर्शाया। वे दिखाते है कि मूल्य और इतिहास हमारे विचारों को कैसे आकार देते हैं। मिल्स के अनुसार, प्रत्येक समाज का स्वयं के विषय में कल्पना कारने का अपना ही तरीका होता है जैसा की अमरीकी स्वयं को पूरा विश्व समझते हैं इस पर भी आकस्मिक सामाजिक परिवर्तनों के वे भी परिवर्तित होते हैं। समाजशास्त्रीय सोच ऐतिहासिक पहलुओं को संदर्भित करने में मदद करती है और व्यक्ति विशेष के आंतरिक और बाहरी विशेषताओं को अर्थ देती है – कैसे व्यक्ति के दैनिक अनुभव उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा की एक झूठी चेतना को आरोपित करते हैं। दूसरे शब्दों में, लोग क्या कल्पना करते है की उनका समाज कैसा हो या इसके सदस्य के रूप में वे स्वयं कैसे हों, यह एक लम्बी ऐतिहासिक प्रक्रिया के माध्यम से आकार पाता है जो एक निश्चित प्रकार के मूल्यों का सृजन करता है जो की सामूहिक चेतना में में गहरे समा जाते हैं।

इन दो विद्वानों को उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है कि किस प्रकार समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य स्वयं में एक विद्वत्तापूर्ण सोच की विविधता के अधीन है। यह कहने का कोई निश्चित तरीका नहीं है कि यही समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य है। बॉमन जैसे कुछ लोग इस समझ को आकार देने में सत्ता द्वारा निभाई गई भूमिका पर ज़ोर दे सकते है कि लोग अपने ज्ञान को कैसे आकार देते है यह समझने में कि संबंधो और सामाजिक स्थिति को कौन बनाता है और अन्य लोग जैसे मिल्स ज्ञान के ऐतिहासिक आकारीकरण की ओर अभिमुख को सकते है, जहाँ समाज और उसके संबंधों के विषय में मूल्य इतिहास और सामाजिक रूप से निर्मित कल्पनाओं द्वारा आकार पाते है। अतः जहाँ बॉमन आनुभाविक वास्तविकता में सीमित रहे वहीं मिल्स अपने तर्क में अधिक सार हैं ।

1.2 समाजशास्त्रीय पद्धति

मिल्स (1959) की 'पृथक अनुभववाद' की अवधारणा का यह मानना है कि अनुभव आधारित अध्ययन अधिकतर आंकड़ों को एकत्रित करने के एक निर्धारित प्रतिमान के साथ उन्हें एकत्रित करने की पारम्परिक शैली का अनुसरण करता है, जिनको सांकेतिक शब्दों में बदला जाता है। यह एक अति स्वीकृत शैली है जो लगभग सभी के द्वारा संस्कार रूप में अपनाई जाति हैः आंकड़ों को एकत्रित करने के निर्धारित नियम, उन्हें विश्लेषित करने, कोडित करने, उन्हें अनुमापित करने और इन सबसे महत्वपूर्ण, जिस रीती में इन आंकड़ों का पूर्ण उपयोग होता है एक निर्विवादित निर्धारित प्रतिमानों में किया जाता है। उदाहरण के लिए, जनमत के संग्रह और विश्लेषण से जुड़े अधिकांश अध्ययन इस पहलु पर गौर करते है कि आंकड़ों के रूप में जनमत का ख़ाका कैसे तैयार होता है और एकत्रित कैसे होता है, परंतु वे आंकड़े प्राप्त करने की प्रक्रिया या उस प्रक्रिया जिसमें जनता की राय बनती है को अनदेखा कर देते हैं। पद्धतियों के इस पूरे खेल में गुमराह करने का भी एक प्रयास होता है कि क्या अध्ययन किया जाना है। हालाँकि, मिल का काम केवल संयुक्त राज्य तक ही सीमित है।

उनका कार्य जनता को एक निश्चित चरित्र दर्शाता है जो केवल अमेरिका के लिए सही हो सकता है और जो पश्चिम केंद्रित रहेगा। वर्ग-चेतना, झूटी चेतना, स्थिति की, अवधारणाओं

की, वर्ग की, जैसी कुछ केन्द्रीय समस्याओं की व्यंजना नहीं की गई है, जो अध्ययन के विशिष्ट क्षेत्रों में ध्यान देने की बजाय समान्यीकरण के मुद्दों के अध्ययन की समस्याओं को बढ़ाते हैं। अतः समाजशास्त्र ने अवधारणाओं और पद्धतियों की एक सूचि तैयार की है जो क्षेत्रीय रहेगी और समान्यीकरण को अलग रखेगी विशेष रूप से गैर-पश्चिमी समाजों के लिए। अतः द्वितीय विश्व युद्ध का अध्ययन सामाजिक प्रक्रियाओं की चर्चा और व्याख्या करेगा जो इसकी उत्पत्ति और कारणों को शामिल नहीं करेगा।

पृथक अनुभववादी शैली में जो महत्वपूर्ण है वो यह है कि जो अध्ययन करने की आवश्यकता है उस पर ध्यान नहीं दिया गया है, और अध्ययन की सामग्री और उसके अध्ययन किए जाने की प्रासंगिकता पर भी जोर देने की बजाय इसकी पद्धतियों पर ज़ोर दिया जाता रहा है।

पृथक अनुभववाद विज्ञान के दर्शन, वैज्ञानिक पद्धति से अधिक सम्बंधित है, बजाय इसके कि वे किसके बारे में अध्ययन कर रहे हैं। अतः समाजशास्त्री जिन्हें समाज और उसके मुद्दों से संबद्ध होना चाहिए वे प्रयोग की जाने वाली पद्धति और इन पद्धतियों के द्वारा क्या अध्ययन किया जाए इस बात में अधिक लिप्त हो जाते हैं, दुसरे शब्दों में पद्धति एक सीमा बन जाति है। साथ ही यह एक प्रयास भी है समाजशास्त्रीय पद्धतियों को अन्य क्षेत्रों में विस्तारित करने का। पद्धतियों में निपुण ना केवल सामाजिक दर्शन में विशेषज्ञ है, अपितु पद्धतीय अवरोधों के माध्यम से सामाजिक विज्ञान के भीतर विशेषज्ञता को आगे बढ़ाने की कोशिश भी करते हैं। जो संस्थान के अनुसार है जहां इस पद्धति को व्यवहार में लाया जाता है। पॉल एफ लेज़र्सफेल्ड ने स्पष्ट किया कि कैसे पृथक अनुभववाद को कार्य की एक शैली के रूप में प्रयोग किया जा सकता है और "समाजशास्त्री को सभी सामाजिक विज्ञानों के पद्धति शास्त्री के रूप में" सम्मानित किया जाता है ।

अतः दर्शनशास्त्र या ज्ञान-मीमांसा की तुलना में अनुभववाद समाजशास्त्र का एक पहचान चिन्ह बन गया है। यह सोचने के बजाय कि चीजें क्यों होती हैं, समाजशास्त्री इस बात पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करते हैं कि क्या हो रहा है और यह कैसे हो रहा है।

समाजशास्त्र अपनी विशेषज्ञता का उपयोग समाजशास्त्रीय पद्धति के उपयोग द्वारा किसी विशेष विषय के बारे में बात करने के लिए करता है और इस प्रकार ज्ञान को अनुभववादी भाषा में परिवर्तित करता है। यह "संस्थानों और विचारों के इतिहास से लोगों के यथार्थपूर्ण व्यवहार" की और अग्रसर होने के द्वारा होता है। यह अध्ययन को अन्य क्षेत्रों से जोड़ने की शर्तों पर भी होता है। इसका एक अन्य दृष्टिकोण है कि कुछ निश्चित सामाजिक स्थितियों का अध्ययन करना, जो दोहराए गए हों। और अंत में समकालीन सामाजिक घटनाओं पर ज़ोर देना है।

ऐमाइल दुर्खीम ने अपने उत्कृष्ट कार्य 'दा रूल्स ऑफ़ सोशियोलॉजिकल मेथड्स' में कहा था कि सामाजिक तथ्यों को अन्य सामाजिक तथ्यों द्वारा समझाया जाना चाहिए, इस प्रकार मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक तथ्यों को समाजशास्त्रीय पद्धति के दायरे से परे रखा जाना चाहिए।

अतः समाजशास्त्र अनुभववादी, विशिष्ट परिस्थितियों से बंधा और काफी हद तक सामान्यीकरण से प्रतिबंधित बना रहेगा। अमूर्त अनुभववाद बहुत अधिक विशिष्टता के मुद्दे को दूर करने की कोशिश करता है और समाजशास्त्र के लिए एक अधिक वैज्ञानिक चरित्र देता है। पृथक अनुभववाद बहुत अधिक विशिष्ट मुद्दों को दूर करने की कोशिश करता है और समाजशास्त्र को एक अधिक वैज्ञानिक चरित्र प्रदान करता है।

1.3 प्रतिदिन के जीवन में समाजशास्त्र

मिल्स (1959) की "द प्रॉमिस" की अवधारणा उस जाल से सम्बंधित है जिसमें लोग जीवन की परिस्थितियों से छुटकारा पाने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं। लोग सांसारिक साधारण प्रतिदिन के जीवन के दुश्चक्रों में फंस जाते हैं जो उनके नियंत्रण से परे परिस्थितियों से प्रभावित होते है परन्तु जिसे वे समझने में असमर्थ रहते है। 'ट्रैप' की अवधारणा के द्वारा मिल्स घटित होने वाले उन सामाजिक परिवर्तनों का उल्लेख करते है जो साधारण व्यक्ति को प्रभावित करते हैं – कुछ बाहरी प्रभाव है जो आंतरिक मानवीय स्थान का अतिक्रमण करते है, और दोनों ही आपस में अंतर-सम्बंधित है। परन्तु यह दुर्भाग्य की बात है कि सामाजिक लोग दोनों के बीच संबंध नहीं कर पाते। वे इस बात को समझने में असमर्थ है कि बाहरी दुनिया में घटने वाली घटनाओं का सीधा असर रोज़मर्रा के जीवन पर पड़ता है और उन्हें वैसा ही बनता है जैसा वे आज है। इस प्रकार विश्व के ग्रामीण क्षेत्रों के लोग विश्व युद्धों द्वारा अपने जीवन में लाए गए परिवर्तनों को समझने में असमर्थ थे, जैसा कि हाल के दिनों में लोग समझ नहीं पाए कि दुनिया के एक सुदूर हिस्से में संघर्ष उनके जीवन को कैसे प्रभावित कर सकता है।

मिल्स ने इतिहास को एक शाखा दी क्योंकि यह मनुष्य और उसकी नियति को आकार देता है। अतः मानवीय शाखा वही तक सीमित है जहाँ हम जन्म लेते हैं और जो हमारे तात्कालिक सामजिक संदर्भ के बहार घटित होता है। इस प्रकार समाजशास्त्रीय कल्पना ऐतिहासिक परिस्थितियों और प्राप्त मूल्यों से निर्मित होती है। इस प्रकार अमेरिकी इस बात से अनजान रहते हैं कि वे अन्य समाजों को कैसे प्रभावित करते हैं। जब लोग अन्य समाजों के संपर्क में आते हैं तो उनकी क्षमता या इच्छा प्राप्त सूचनाओं के आधार पर इच्छा अनुसार अवस्था में लायी जाती है ना कि वास्तविक परिस्थितियों के आधार पर। अतः रोजमर्रा के जीवन के समाजशास्त्र में मूल्यों द्वारा करण अक्सर नज़रंदाज़ कर दिया जाता है।

सामाजिक विज्ञान ने तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से कारणों का सूत्रपात किया। विश्लेषक वह होता है जो इतिहास और व्यक्ति दोनों के बीच की कड़ी को पहचान सकता है। वे व्यक्ति को उस विशेष अवधि में अपने अनुभवों को समझने में सक्षम बनाते हैं और समान परिस्थितियों में अन्य व्यक्ति को देखकर जीवन में अपने अवसरों की गणना करते हैं। व्यक्ति का निजी जीवन पीढ़ियों से जुड़ा होता है और ऐतिहासिक संदर्भ के भीतर उनका एक जीवनचरित होता है। और एक सामाजिक व्यक्ति उस समाज में बहुत अधिक सम्मिलित होता है जिसमें वह रहता है, हालांकि प्रत्येक व्यक्ति को समाज के द्वारा बनाया और गढ़ा जाता है और यह घटनाओं को आकार देता है। अतः समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य इन ऐतिहासिक सीमाओं के व्यापक पहलुओं को देखने में सक्षम है।

कुछ सवाल ऐसे हैं जो सामाजिक विश्लेषकों ने समाज के संबंध में, उसके घटकों और उसके अंतर-संबंधों के विषय में, सामाजिक व्यवस्था में उसके अंतर के संबंध में, और ऐतिहासिक घटनाओं से समाज कैसे प्रभावित होता है, विभिन्न समयावधियों के सामाजिक संदर्भ और इस अवधि में स्त्री और पुरुष कैसे रह रहे हैं के संदर्भ में पूछे हैं। समाजशास्त्रियों की विशेष क्षमता यह है कि वे व्यक्ति को ऐतिहासिक और वर्तमान दोनों परिस्थितियों में व्यापक संदर्भ से जोड़ते हैं। समाजशास्त्री का काम व्यक्तिगत तौर पर एक स्पष्टीकरण प्रदान करना है, जैसे किसी विशेष सामाजिक मुद्दे पर जैसे दहेज के व्यापक संदर्भ में, जो इसे ऐतिहासिक और परिस्थितिजन्य बनता है और कायम रखता है और इसी विश्लेषण के समान समाजशास्त्री को परिवर्तनों का भी पूर्वानुमान करने में सक्षम होना चाहिए। इस प्रकार समाजशास्त्र व्यक्तिगत, संरचनात्मक और उससे भी परे के संदर्भो को जोड़ता है ।

बॉमन (1990) अपनी अवधारणा पर लिखते हैं "वन्सेल्फ़ विद अदर्स इन एवरीडे लाइफ"—स्वतंत्र या परतंत्र होने का अनुभव कुछ ऐसा है जिसे हम सभी हल करना चाहते है क्योंकि यह लगभग सभी के लिए रहस्य बना हुआ है। स्वतंत्र या परतंत्र होने के अनुभव से जुड़े विकल्पों के पहलु व्यक्ति के निर्णय लेने की क्षमता से सम्बंधित है ।

मनुष्य होने के नाते हम हमेशा एक समूह का हिस्सा हैं और व्यक्ति और सामूहिक के बीच तनाव एक निरंतर सामाजिक मसला है।

सामाजिक अवधारणाएं

1) समूह

व्यक्ति समूह के बाहर कार्य नहीं कर सकता क्योंकि वह उस एक समूह में पैदा होता हैं और इसी कारण वह एक सामाजिक प्राणी हैं। मनुष्य होने की असल प्रक्रिया समूह द्वारा प्रदान की जाती है जो समाजीकरण के माध्यम से उसे पहचान और अस्तित्व के साधन दोनों प्रदान करता है। हालाँकि व्यक्ति को भी कुछ हद तक असुविधा होती है क्योंकि समूह उसे नियंत्रित भी करता है। इस प्रकार सामाजिक समूह एक प्रबोधक और अवरोधक दोनों होता है। सभी सामाजिक ज्ञान समूह से प्राप्त किया जाता हैं और प्राप्त मूल्यों और शर्तों के साथ व्यक्ति के गठन में लगाया जाता है।

2) समाजीकरण

समूह स्वयं को सामाजिक बनाता है ताकि समाज में रहने में सक्षम हो सके। यह व्यक्ति को दबावों का सामना करने और सूव्यवहार करने में मदद करता है। प्राथमिक समाजीकरण के घटक व्यक्ति को उसके रास्ते में आने वाले अनेक लोगों में से अन्य महत्वपूर्ण लोगों का चयन करने के लिए स्वयं के इरादों और अपेक्षाओं को विकसित करने में सक्षम बनाता है। इसका अर्थ यह भी है कि व्यक्ति भी अन्य लोगों का चयन करते समय कुछ लोगों को छोड़ भी रहा है। इसका यह भी अर्थ है कि समूह जिनसे व्यक्ति इस तरह के मौजूदा अन्य समूहों से समन्वय स्थापित करता है—जिन्हें संदर्भ समूह कहा जा सकता है; समूहों को एक पंक्ति में बांधता है। नियामक संदर्भ समूह वो हैं जिनका अनुसरण एक विशेष व्यक्ति करता है और वे समूह वहां त्रुटियों को सुधारने के लिए ही होते हैं। परन्तु वे वहाँ तभी प्रभावकारी हैं यदि कोई व्यक्ति उनके दबावों को कुछ भी प्रासंगिकता देता है। यहाँ तुलनात्मक संदर्भ समूह भी हैं जो सामाजिक अस्तित्व की परिधि का निर्माण करते हैं।

द्वितीयक समाजीकरण में, जो की समाजीकरण के बाद का चरण हैं जो व्यक्ति के जीवन में घटित होते हैं— यह एक आंषिक बदलाव होगा जिसका प्रयोग व्यक्ति नए कौशल और ज्ञान प्राप्त करने के लिए करता था ताकि वह स्वयं को नए बदलावों के साथ अद्यतन कर सके जो व्यक्ति के जीवन में अक्सर आते रहते हैं। हालाँकि व्यक्तित्व का मूल आमतौर पर प्राथमिक समाजीकरण द्वारा बनता है और जीवनकाल के दौरान कमोबेष स्थिर रहता है।

3) भीतरी-समूह और बाहरी-समूह

एक व्यक्ति ज्ञात और अज्ञात कई लोगों के योगदान का उत्पाद होता है, जिनका प्रभाव व्यक्ति के निर्माण में रहा। हम कुछ लोगों ऐसे होते हैं जिनसे हम प्रभावित होते हैं, बातचीत करते हैं और जिनके साथ हम एक संबंध, एक अंतरंगता साँझा करते हैं, परन्तु कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनसे हम बमुश्किल ही मिलते हैं। इसके पश्चात उनके साथ हमारे एक कार्यात्मक संबंध होते हैं और इससे अधिक उनके साथ कुछ

भी रखना उनके निजी स्थान में घुसपैठ होगा। इस प्रकार एक उचित दूरी बनाए रखने की शुरूआत होती है–एक जिसके साथ व्यक्ति घनिष्ट होता है, उसे जानता है और दूसरा जिसके साथ एक व्यक्ति का केवल एक विशिष्ट कार्यात्मक संबंध होता है।

यहां तक कि यह समूहों में भी निकटता की सीमा पर निर्भर करता है – मानसिक और शारीरिक दोनों स्तरों पर। सहचर्य की भावना की समझ व्यक्तियों पर निर्भर करती है कि वो दूसरों को भी स्वयं के समान समझें जिनके अपने उद्देश्य और लक्ष्य हैं। यह हम की भावना सहानुभूति और संवेदना के साथ आती है जो साथी-मनुष्यों को समीप लाती है, तब हम-भावना में क्या विशेष अंतर लाया जा सकता है? भिन्नता 'हम' और 'वे' – 'हम सब' और 'उनके' के बीच के रवैये में।

भीतरी-समूह और बाहरी-समूह

सबसे पहले हमारे मस्तिष्क में क्या विचार आता है जब हम यह बात करते हैं कि भीतरी-समूह परिवार है – एकजुटता, आपसी विश्वास और सामान्य बंधन वह बातें है जो हमारे मस्तिष्क में आती है जब हम इस शब्द का उच्चारण करते हैं। ये सभी विशेषताएँ परिवार के प्रत्येक सदस्य के गुण हैं। जो अनुसरित होती है वह है आपसी मदद, सुरक्षा और दोस्ती जो 'हम' की भावना लाती है, घर जो की एक समुदायिक भावना है। ऐसा संभव है कि हर समय सुखद ना हो परन्तु यह निश्चित है कि दिन के अंत में हम यह सोचते है की हम साथ है और यह सुरक्षा की भावना लाती है।

भीतरी-समूह छोटा होता है, आमने-सामने होता है और अक्सर प्राथमिक पहचान का एक स्रोत होता है। यह सामान्यीकृत पारस्परिकता या विनिमय द्वारा चरितार्थ होता है जहाँ इस बात की कोई पैमाइश नहीं होती कि क्या दिया गया है; उदाहरण के लिए माता-पिता उसका कोई मूल्य नहीं लगते जो वे अपने बच्चों के लिए करते है और बच्चे भी ऐसा ही करते है। परिवार से अलग भीतरी-समूह के अन्य उदाहरण दोस्ती, काम की जगह पर सहकर्मियों और एक छोटा ग्रामीण समाज है।

सीमाओं के मामले में भीतरी-समूह-बाहरी-समूह के बीच एक भिन्न रेखा है जो उन लोगों का सीमांकन करती हैं जो उन लोगों से सम्बंधित हैं जो उनसे सम्बंधित नहीं हैं। सामाजिक समूह अपनी सीमाओं को सुगठित बनाना महत्वपूर्ण मानता है ताकि समाज आसानी से लोगों को परिभाषित कर सके और उन्हें वर्गीकृत कर सके। इस प्रकार समूह अक्सर स्वयं को वर्ग, लिंग और जातीय रेखाओं के आधार पर परिभाषित करते हैं और प्रगाढ़ भीतरी-समूह की भावनाएं भी समाज में विभाजनकारी शक्तियां उत्पन्न करती है जो लोगों को एक दुसरे से दूर रखती है। यह विभिन्न समूहों के बीच शत्रुता पैदा कर सकता है जो कि असमानता की तर्ज पर एकदूसरे से टकरा सकते है। इस प्रकार पश्चिम में विशिष्ट क्लब गोरे और उच्च वर्ग के पुरुषों के लिए बनाएं गये थे, जिससे काले लोगों, गरीबों और यहाँ तक कि कभीकभार महिलाओं को भी बाहर रखा जाता था।

अजनबी

अजनबी और कुछ नहीं एक अपरिचित व्यक्ति होता है जो उस संसार में मौजूद होता है जिसमें हम रहते हैं। अजनबी एक ऐसा व्यक्ति होता है जो किसी ज्ञात श्रेणी या समूह से संबंधित नहीं है। अधिक खुले स्थानों में अजनबी की अवधारणा कम ही सूपरिभाषित हुई है जितना की शहरों में। शहर को परिचित रिश्तों और समूहों के टूटने से चिह्नित किया जाता है, जिससे प्रतिमानहीनता और नैतिक शून्यता की स्थिति भी पैदा हो सकती है। इस प्रकार समूह सामाजिक मूल्यों और मानदंडों को बनाए रखने के बावजूद भी मतभेद पैदा करने में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मतभेद स्वयं में तब तक गलत नहीं हो सकते जब तक कि विविधता को स्वीकार न किया जाए और असमानता या कलंक का मामला न बनाया जाए।

एकजुट और पृथक

सामाजिक समूह जो सामाजिक एकता और स्थिरता को बनाए रखने में कार्यात्मक होते हैं, वो उस प्रकार के होते है जिन्हें हम एक समुदाय कहते हैं। एक समुदाय व्यक्ति के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करता है जो अक्सर पहचान और सामाजिक कल्याण का ठिकाना भी होता है। समुदाय की हानी जड़विहीन हो जाने की भावना का सूत्रपात करता है जो कि अक्सर मानसिक चिंता और यहां तक कि असामाजिक व्यवहार का कारण भी होता है। फिर भी बहुत मजबूत समुदाय भी लोगों के बीच अवरोध पैदा करते हैं। अतः सामाजिक समूह लोगों को एक साथ रखने और उन्हें अलग रखने दोनों के लिए ही अनुकूल हैं।

बोध प्रश्न 1

1) रोजमर्रा के जीवन में समाजशास्त्र पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) समूह और समाजीकरण की समाजशास्त्रीय अवधारणा की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

1.4 समाजशास्त्र और अन्य अनुशासन और यह वैज्ञानिक क्यों हैं

1.4.1 व्यावहारिकता और नौकरशाही लोकाचार के प्रकार (मिल्स)

सामाजिक विज्ञान में मुख्य समस्या में एक वस्तुनिष्ठता और परिप्रेक्ष्य है। अध्ययन के लिए एक सामाजिक समस्या का चयन वह है जिसमें चुनाव स्वयं एक पक्षपात के अधीन हो सकता है। एक व्यक्ति को जो महत्वपूर्ण लगता है, हो सकता है वह दूसरे व्यक्ति के लिए उतना महत्व नहीं रखता हो। यही करण था कि उत्तर-औपनिवेशिक सिद्धांत लिंग पक्षपात और पक्षपात के अन्य प्रकारों के विषय में बात करना प्रारम्भ करता है। इसके अलावा यह भी महत्वपूर्ण है कि विश्लेषक के आंतरिक मूल्यों के आधार पर किसी समस्या से संपर्क करने का तरीका भी भिन्न हो सकता है और जैसा कि अक्सर प्रदर्शित किया जाता रहा है, विश्लेषण स्वयं पूरी तरह से निश्पक्ष नहीं होता है।

अध्ययन किए जाने के लिए सामाजिक मुद्दे वास्तव में केवल तब ही उचित होंगे जब उनका अध्ययन बिना किसी "मूल्यों के टकराव" के किया जाए, एक ऐसी स्थिति जिसे हासिल करना लगभग असंभव है क्योंकि अधिकांश लोग अनजाने में ही पक्षपात को ढोते हैं, जिनके बारे में वे स्वयं भी नहीं जानते होंगे। समस्याओं के समाधान के बजाय किसी व्यक्ति को बौद्धिक शक्ति के क्षेत्र में धकेला जा सकता है।

जैसा कि हयूम ने प्रसिद्ध टिप्पणी दी है कि "हम इस बात का निर्णय नहीं ले सकते की हम जिस पर विश्वास करते है उस से कैसा व्यवहार करें" और ना ही "हम इस बात का निर्णय ले सकते है कि अन्य लोगों को किस तरह व्यवहार करना चाहिए जैसा की हम व्यवहार करते है।" विचारों की बहुलता को स्वीकार करने के खुलेपन को समाजशास्त्रीय सोच के एक पहलू के रूप में भी देखा जा सकता है।

सामाजिक वैज्ञानिक उनके संदर्भ में दिए गए ढांचे के भीतर काम करता है, समाज को उसी रूप में स्वीकार करते हुए जैसा वो है। सामाजिक वैज्ञानिक भी समाज का एक सदस्य होता है और ऐसे मानदंडों और मूल्यों के समुच्चय के रूप में समाजीकृत किया जाता है जिससे उपर उठाना मुश्किल हो सकता है परन्तु उसे पहचानना संभव हो सकता है। यह केवल इन निहित मूल्यों को पहचानने से है कि कोई उनसे पार पाने की उम्मीद कर सकता है, लिंग पक्षपात एक स्पष्ट उदाहरण है।

इन दिनों अध्ययन ज्यादातर सत्ता धारकों और उन लोगों को खुश करने के लिए किया जाता है जो अनुसंधान को चलाने के लिए संसाधनों का नियंत्रण रखते है– जैसे सैन्य, सामाजिक कार्यकर्ताओं, बड़े निगमों और जेल के संचालन के लिए, और इस तरह के अनुसंधान के लिए बाजार भी बढ़ रहा है। वैचारिक कारणों से भी शोध किया जाता है, जैसे कि किसी विशेष राजनीतिक दृष्टिकोण को साबित करना या उसे अस्वीकार करना, उदाहरण के लिए नारीवाद या पर्यावरणवाद को भी लिया जा सकता है ।

इस प्रकार, सामाजिक वैज्ञानिक को कार्य के राजनीतिक अर्थों के बारे में पता होना आवश्यक है। यहाँ वैचारिक तर्कसंगतता के लिए एक स्पष्ट मांग है क्योंकि नए संस्थान आते जा रहे हैं और पुराने संस्थानों ने अपनी व्यापारिक शक्ति खो दी है। सामाजिक वैज्ञानिक, यदि अनजाने में, नौकरशाही व्यवस्था के लिए काम कर रहा है ताकि वैचारिक तर्कसंगतता को कायम रखा जा सके। दोनों प्रकार अंततः संस्थानों को पूरी तरह वैध बनाने के लिए ही बनाये गए हैं।

सामाजिक विज्ञानों के राजनीतिक अर्थों और प्रशासनिक उपयोगों ने एक बदलाव देखा है और जोड़-तोड़ की नई पद्धतियों द्वारा इसे सुरक्षा प्रदान की जा रही है जिसे नौकरशाही सामाजिक विज्ञान की संज्ञा दी जा सकती है। इस तरह के शोध कार्य में धन प्रदान करना शामिल हो सकता है और सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकती हैं केवल उस चीज को साबित करने के लिए जो वित्त पोषण संस्था या एजेंसी को विशेषाधिकार प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, बांध बनाने पर एक राज्य निर्णय लेता है वह इस पर यह साबित करने के लिए अनुसंधान प्रायोजित कर सकता है कि बांध का पर्यावरण पर बहुत कम नकारात्मक प्रभाव पडेगा है। इस प्रकार सामाजिक अनुसंधान का उपयोग एक विशेष लाभदायक उद्यम को वैध बनाने के लिए एक राजनीतिक और आर्थिक उपकरण के रूप में किया जा सकता है।

प्रायोगिक समाजशास्त्री केवल इस बारे में चिंतित हैं कि कौन से विशिष्ट ग्राहक जानना चाहते हैं – यह सार्वजनिक से विशिष्ट में बदलाव है। इस प्रकार अमूर्त अनुभवजन्य

अनुसंधान का उपयोग काम में लाया जा सकता है यदि यह एक संस्था के अधीन हो और जिसके पास इसे संसाधित करने के लिए धन है। जैसे ही कार्य आगे बढ़ेगा, श्रम के विभाजन पर 'निगमित नियंत्रण' होगा। लोगों का एक विशाल समूह इसमें शामिल है– बौद्धिक प्रशासक से लेकर शोध प्रवर्तक, एवम् युवा नये सदस्य तक।

इस प्रकार सत्ता वाले संस्थान समाजशास्त्रियों को बिना किसी दार्शनिक आधार के उपकरणों और तकनीकों के साथ अनुसंधान करने के लिए प्रशिक्षित कर सकें ताकि नीतिपरक और नैतिक मूल्यांकन बनाया जा सके हैं। समाजशास्त्रीय कल्पना से वंचित होने के साथ, यह और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि प्रश्नवाचक नीतियों की आवश्यकता हो। मुद्दा यह है कि सामाजिक विज्ञान एक 'सार्वजनिक रूप से जिम्मेदार उद्यम' होना चाहिए, लम्बे समय से इसकी सारी संभावनाएं प्रतिबंधित थी। यहाँ यह संभावना है कि शोधकर्ताओं ने नौकरशाही व्यवस्था में काम करते समय अपना वैयक्तिकता खो दी हो।

अकादमिक गुट की भूमिका कार्यों का परिचय देती है और आलोचकों की अधिकता को भी बनाए रखती है। प्रतिष्ठा उन समूहों की मदद से बनाई जाती है जो सामाजिक दायरे में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करते हैं। इसलिए, गुट रणनीति निर्धारित करते हैं।

नौकरशाही उद्देश्यों की वृद्धि के लिए सामाजिक वैज्ञानिक के उपयोग ने अनुशासन के बौद्धिक और दार्शनिक दायरे को सीमित कर दिया है।

नियंत्रण जो नौकरशाही पद्धति निश्चित रूप से किसी भी चीज़ पर जो सोची जा सकती है के मूल्यों और विचारों पर रखती है जो इतिहास के नियंत्रण में योगदान भी देता है। भाषा के उपयोग पर भी अंकुश लगाया गया है और उसे निर्धारित किया गया है। इस प्रकार समाजशास्त्रीय अनुसंधान पर नौकरशाही का नियंत्रण बौद्धिक विकास के साथ-साथ सामाजिक न्याय के विरुद्ध भी है।

1.4.2 मिल्सः इतिहास का प्रयोग

इतिहास के साथ सामाजिक भागीदारी समय के साथ सामाजिक परिवर्तनों और सामाजिक संस्थानों के इतिहास में देखने को मिलता है, उदाहरणस्वरूप भारत में एक समाजशास्त्री जाति जैसे संस्थान के विकास और अतीत में रुचि रखेगा। विशेष ऐतिहासिक युगों में जैसे कि विक्टोरियन इंग्लैंड या सत्रहवीं शताब्दी के फ्रांस में सामाजिक जीवन का अध्ययन करना भी रुचिपूर्ण है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रयोग की गई विधि में समस्याएं हैं। इस सन्दर्भ में मुख्य कार्य है रिकॉर्ड को सही रखना, हालांकि यह भी संभव है कि कुछ विशेष हितों के आधार पर बदलाव किया गया हो। और इसलिए यह कहना कि इतिहास को विकृत किया जा सकता है गलत नहीं है। इस प्रकार ऐतिहासिक तथ्यों की शुद्धता महत्वपूर्ण है। इतिहासकार का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है।

इतिहासकारों का काम बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसमें सामाजिक विज्ञान के सभी पहलुओं को शामिल किया जाता है, सभी सामाजिक अध्ययनों को उस विशेष क्षेत्र की समस्या के ऐतिहासिक दृश्टिकोण की जानकारी रखने की आवश्यकता होती है। हमेशा एक धारणा रही है जब दुनिया के किसी एक क्षेत्र का इतिहासकार दूसरे क्षेत्र का अध्ययन करने जाता है, तो संभव है कि वह तुलना करना शुरू कर देता है। किन्तु यदि हम तुलनात्मक अध्ययन नहीं कर रहे हैं तो भी ऐतिहासिक सामग्रियों की जरूरत है। इतिहास समाजशास्त्रीय विश्लेषण के लिए आवश्यक गहराई जोड़ता है और वर्तमान सामाजिक स्थितियों को एक बैक ड्रॉप प्रदान करता है।

1.5 किन तरीकों से समाजशास्त्र वास्तविकता का पड़ताल करता है

1.5.1 मिल्सः मानवीय भिन्नता

ऐतिहासिक वास्तविकताएँ हमें भिन्न सामाजिक प्रणालियों और सामाजिक संरचनाओं के बारे में बताती है और इसकी तुलना में पहला और सबसे महत्वपूर्ण काम निश्पक्ष दृष्टिकोण रखना है। एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य मूल्यों के संदर्भ में सभी समाजों को एक ही पैमाने पर रखता है और उन्हें केवल जटिलता और जनसांख्यिकी जैसे संरचनात्मक संदर्भों में श्रेणीगत करता है।

ऐतिहासिक रूप से आर्थिक और राजनीतिक संस्थानों के बारे में सामाजिक वैज्ञानिक अधिक चिंतित रहे हैं और इनसे समाज और इसके संस्थानों के कामकाज में मददगार जानकारियां मिली हैं। सामाजिक संरचना को अलग तरह से परिभाषित किया जा सकता है किंतु मूल समझ यह है कि "प्रत्येक कार्य के अनुसार वर्गीकृत संस्थानों का संयोजन"। समकालीन संदर्भ में सामाजिक संरचना को एक राजनीतिक राज्य के रूप में देखा जाता है। राष्ट्र-राज्य हर आदमी की दुनिया और जीवन पर हावी है। समकालीन समाजशास्त्र स्वयं को राष्ट्र राज्य के अध्ययन और राष्ट्र राज्य की शक्ति समाज को कैसे प्रभावित करती है उससे दूर नहीं रख सकता है।

समाज का अध्ययन करने में, समाजशास्त्री समाज का अध्ययन करने वाले सामाजिक मानवविज्ञानी से भी सहयोग लेते हैं। अर्थशास्त्री भी सामाजिक संबंधों का अध्ययन करते हैं और समकालीन अर्थशास्त्री समाज के सामाजिक संबंधों और मानदंडों और मूल्यों से गहराई से जुड़े होते हैं और इस तरह समाजशास्त्रियों के समान रुचि रखते हैं। राजनीतिक वैज्ञानिक भी समाज और उसके शक्ति संबंधों का अध्ययन करते हैं और समकालीन समय में समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच बहुत अधिक अभिसरण होता है।

यह सर्वज्ञात है कि सामाजिक जीवन की विविधता ने सामाजिक वैज्ञानिक के कार्य को विभाजित करने में सक्षम बनाया है। विषयों में पारस्परिक जुड़ाव है हालांकि, इसमें असहमति हो सकती है, साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि सभी विषयो की उत्पत्ति अपने तरीके से हुई है। भले ही आज एक-दूसरे को कमतर बताने वाले विषयों की स्वीकार्यता बढ़ रही है। किंतु एक स्वीकृति यह भी है कि विषय एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

बाऊमनः महत्व और कार्य

मूल्य संस्कृति से उत्पन्न होते हैं और पीढ़ियों से ज्ञान प्राप्त करते हैं। वे व्यापक सामाजिक संपर्क के साथ कुछ हद तक बदल सकते हैं लेकिन कुछ मुख्य मूल्य हमेशा बने रहते हैं। मूल्यों में बदलाव उस तरीके को प्रभावित कर सकता है जिसमें व्यक्ति कुछ लक्ष्यों के लिए आकांक्षा करता है; उदाहरण के लिए, शिक्षा पर प्रभाव डाल कर उच्च मूल्य प्रदान कर सकता है किन्तु बाद में जीवन में यह धन के अधिग्रहण की दिशा में एक उच्च मूल्य की ओर बढ़ सकता है। कुछ क्रियाएं आंतरिक मूल्यों द्वारा स्वचालित रूप से उचित हैं और एक विकल्प बनाने के किसी भी प्रयास को शामिल नहीं करती हैं। दूसरों पर बहस हो सकती है क्योंकि वह बाहर के प्रभाव में आता है।

किसी व्यक्ति के प्रभावित होने की संभावना अधिक होती है और किसी व्यक्ति या संस्था के पास अधिक अधिकार होने से मूल्यों में बदलाव होता है; उदाहरण के लिए विद्यालय में

शिक्षक या राजनीतिक संस्था। किसी स्रोत के पास जितनी अधिक वैधता होती है, उसका प्रभाव उतना ही अधिक होता है। किसी भी प्रकार की वैधता समाज द्वारा दी जाती है।

पारंपरिक मूल्य वैधता रखती है, जिसका समय के द्वारा परीक्षण किया जाता है। परंपराओं का एक ऐतिहासिक संदर्भ और एक पाठ होता है। ऐसे मूल्यों की स्वीकृति उन मूल्यों की तुलना में अधिक अधिकार रखती है जिसने हाल ही में खुद को साबित करना है, और बदलाव के इस दौर में पहले का मूल्य जमीन पर अधिक मजबूत पकड़ रखता है। पारंपरिक मूल्यों के बीच जगह बनाने के लिए नए मूल्यों के लिए आवश्यक बचाव क्या है। करिश्मा करने वाले व्यक्ति केवल नए मूल्यों के साथ सामान्य लोगों की तुलना में कुछ नया शुरू करने और इसे स्वीकार करने के लिए आगे बढ़ सकते हैं। समय के साथ वैध स्रोत बदल सकते हैं जैसे कि धार्मिक प्रचारकों से टेलीविजन व्यक्तित्वों में बदलना। इस प्रकार मैक्स वेबर ने पारंपरिक करिश्माई और कानूनी-तर्कसंगत तीन प्रकार के प्राधिकारों की पहचान की है।

तीसरा प्रकार कानूनी-तर्कसंगत वह है जिसके पास कानूनी अधिकार है और अपने अधिकारिकता प्रदान करने के लिए तर्कसंगत और वैध स्रोत है। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति को कानूनी अदालत में न्यायाधीश बनने की अपनी क्षमता साबित करनी होती है। किन्तु न्यायाधीश द्वारा दिया गया राय अंतिम अधिकार होता है।

ये तीन प्रकार केवल विश्लेषणात्मक संरचना है और वास्तविक स्थितियों में आसानी से विभिन्न प्रकार के प्रभावों का उत्पादन कर सकता है।

1.6 समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण का निरीक्षण, व्याख्या और जाँच करना

1.6.1 बॉमनः समाजशास्त्रीय नज़रिया

समाजशास्त्रीय नजरिया ब्यूमन द्वारा सुझाया गया प्रस्ताव है जिसमें इन्होंने अधिक आलोचनात्मक और मूल्यांकन के परिप्रेक्ष्य में हमारे आसपास क्या हो रहा है इसके विश्लेषण की भावना विकसित करने के बारे में बात की है। एक बार जब हम एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण विकसित कर लेते हैं तो हम अपने आस-पास होने वाली चीजों के बारे में अधिक तर्कसंगत दृष्टिकोण प्राप्त कर लेते हैं। इसी प्रकार जब दंगे होते हैं, फिर एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य हमें अपने पूर्वाग्रहों के आधार पर मनमाने ढंग से दोष देने के बजाय मूल कारणों तक पहुंचने में सक्षम करेगा; जैसे हम केवल जातीय या नस्लीय चरित्रों के संदर्भ में बात करने के बजाय अर्थव्यवस्था और वर्ग जैसे कारणों की पहचान करने में सक्षम होंगे। इस प्रकार एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य हमें सत्य के निकट पहुँचने में सक्षम बनाता है।

यह अनुमान लगाया जा सकता है कि समाजशास्त्र हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। यह हमें कुछ हद तक पूर्वानुमान के साथ-साथ तर्कसंगत होने में सक्षम बनाता है। समाजशास्त्र का अध्ययन वैज्ञानिक होने की उम्मीद है क्योंकि गतिविधियां और उत्पाद मूल रूप से सभी के लिए उपयोगी हैं। यह अध्ययन के तहत वस्तु की पूरी समझ में भी मदद करता है।

1.6.2 मिल्सः विज्ञान का दर्शन शास्त्र

विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के बीच के संबंध के बारे में भ्रम है क्योंकि पहले वाला अपने प्रक्रिया में उद्देश्यपूर्ण और कठोर माना जाता है और बाद वाले को इसके प्रयोग में अधिक

खुला और उदार माना जाता है। हालांकि सामाजिक विश्लेषकों ने काम में समाजशास्त्रीय कल्पना का उपयोग करते समय किसी भी कठोर प्रक्रियाओं से बचते रहे हैं। 'मेथड' को सबसे पहले यह करना है कि कैसे कुछ आश्वासन के साथ सवाल पूछे और जवाब दिए जाएं कि उत्तर कमोबेश स्थिर हो। 'सिद्धांत' को एक शब्द का उपयोग करने पर ध्यान देने के साथ उपरोक्त सभी कुछ करना है, विशेष रूप से उनकी व्यापकता और उनके तार्किक संबंधों की डिग्री में।

जिसको विधि और सिद्धांत में महारत हासिल हो जाती है वह एक आत्म-जागरूक विचारक बन जाता है। एक उत्कृष्ट सामाजिक वैज्ञानिक के लिए, "विधियां विधियां हैं और सिद्धांत सिद्धांत हैं"; वे स्वायत्त निकाय नहीं हैं। समस्या और स्थिति के बारे में पहले व्यक्ति से प्राप्त जानकारी एक वैज्ञानिक को एक कार्यशील सामाजिक वैज्ञानिक बनाती है। वैज्ञानिक प्रत्येक अध्ययन में प्रयुक्त सिद्धांत और विधि पर प्रतिबिंबित होता है। तरीकों या कार्यप्रणाली की कोई सरल उपाय समझ नहीं हो सकती है – समस्या की भावना और हल करने की इच्छा आवश्यक है। वहाँ अग्रिम तरीकों और काम के बीच घनिष्ठ संपर्क के विधि और दायरे को जानने के भी अत्याधुनिक प्रयास हैं।

जब हम अनुभवजन्य सत्यापन की बात करते हैं, तो किसी को तथ्यों और विचारों को कैसे एक साथ लाना है इस पर बात करनी होती है। अधिक महत्वपूर्ण यह जानना है कि ऐसा क्या है जिसे सत्यापन की आवश्यकता होती है और यह कैसे किया जाना है। जब बहुत बड़े सिद्धांत और अमूर्त अनुभववाद की तुलना की जाती है, तो पहले वाला निगनात्मक सत्यापन विधि का उपयोग करता है, जबकि बाद में जिसे सत्यापित करना है वह एक गंभीर समस्या नहीं है। उत्कृष्ट शोधकर्ता छोटे अनुभवजन्य अध्ययनों को रचना के विस्तृत अनावृत्ति और साक्षात दृश्य की अवधारणाओं का उपयोग करते हैं। सामाजिक अध्ययन के दृष्टिकोण के अलग-अलग तरीके हैं और उन्हें बनाने में कई लोगों को शामिल करता है। क्लासिकल सामाजिक विज्ञानों को सूक्ष्म अध्ययन या परिणामी अवधारणाओं की आवश्यकता नहीं है। अध्ययन की इस प्रक्रिया में कटौती के साथ-साथ पुनः सूत्रीकरण भी किया जाता है।

समस्याएं तरीकों, सिद्धांतों और मूल्यों पर टिकी हुई है। और यह एक ज्ञात तथ्य है कि सवालों के लिए कोई जवाब तैयार नहीं हैं। एक समाधान से अधिक एक समझ के लिए क्या आवश्यक है। एक प्रभावी समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के लिए, संबोधित की जाने वाली समस्याओं में विभिन्न सार्वजनिक समस्याओं को शामिल किया जाना चाहिए और इन समस्याओं और सामाजिक संरचना के बीच के जुड़ाव को बाहर लाना चाहिए। जिन मूल्यों को चुनौती दी गई है और मुद्दे को दांव पर लगाया गया है, आदि को ध्यान में रखा जाना चाहिए। यह उस समय बहुत दुर्भाग्यपूर्ण हो जाता है जब कुछ निश्चित मूल्य को अपूर्ण माना जाता है एवं वह वास्तविक नहीं होता है।

बोध प्रश्न 2

1) एक अनुशासन के रूप में समाजशास्त्र क्यों वैज्ञानिक है इसके बारे में बताएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

2) समाजशास्त्र वास्तविकता को कैसे देखता है? इसके बारे में बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

3) हम समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों का अवलोकन, व्याख्या और सत्यापन कैसे करते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

1.7 सारांश

इस इकाई में, हमने चर्चा की है कि हम समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से चीजों को कैसे देखते हैं। इस संबंध में हमने विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने के लिए दो प्रमुख समाजशास्त्री ज़िग्मंट ब्यूमन और सी राइट मिल्स के योगदान पर ध्यान केंद्रित किया है। हमने रोज़मर्रा के जीवन में समाजशास्त्र की विभिन्न अवधारणाओं पर भी चर्चा की है और हम समाजशास्त्रीय तरीकों के माध्यम से समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों का अवलोकन, व्याख्या और सत्यापन कैसे करते हैं।

1,8 सन्दर्भ

एडम, बी. (1995). टाइम वाचः द सोशल एनालिसिस ऑफ टाइम. कैंब्रिजः पॉलिटी

बॉमन, जेड. (2000).लिक्विड मॉडर्निटी. कैंब्रिज, मासः पॉलिटी

बॉमन, जेड. (1989).मॉडर्निटी एंड द होलोकॉस्ट. कैंब्रिज, मासः पॉलिटी

बेक,यू. (1992).रिस्क सोसाइटीः टूवार्ड्स ए न्यू मॉडर्निटी. थाउजेंड ओक्स, कैलिफ.: सेज

बर्गर, पी.एल. एंड केलनर, एच. (1982).सोशियोलॉजी रिइन्टरप्रेटेडः एन एसे ऑन मेथड एंड वोकेशन हार्मंड्सवर्थः पेंगुइन

बर्किट, आई. (1999).बॉडीज ऑफ थॉटःएम्बोडीमेंट, आइडेंटिटी एंड मॉडर्निटी. थाउजेंड ओक्स, कैलिफ.: सेज

कैल्हन, सी. (1997).नेशनलिज्म. (बकिम्घम एंड मिनीपोलिस, मिनेसोटा.: ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस एंड मिनेसोटा प्रेस

डेलेंटी. जी. (2000).सिटीजनशिप इन ए ग्लोबल ऐज. बकिम्घमः ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस

डेल्फी, सी. एंड लियोनार्ड, डी. (1992)फैमिलिअर एक्स्प्लॉइटेश्नः ए न्यू एनालिसिस ऑफ मैरिज इन कंटेम्पररी वेस्टर्न सोसाइटी. कैंब्रिज, मास.: पोलिटी

डे ब्यूवॉयर, एस. (1994).द एथिक्स ऑफ एम्बिग्युटी. न्यू यॉर्कः सिटाडेल; ओरिजनली पब्लिष्ड इन 1948-

फेदरस्टोन, एम. (1991).कंज्यूमर कल्चर एंड पोस्टमॉडर्निज़्म. लन्दनः सेज

फूको, एम. (1979).द हिस्ट्री ऑफ सेक्सुअलिटी, वॉल्यूम एन इंट्रोडक्शन. ट्रांसलेटेड बाई आर. हर्ली, हर्मोंड्सवर्थः पेंगुइन

गर्थ, एच. एंड मिल्स, सी.डब्ल्यू. (एड्स) (1970).फ्रॉम मैक्स वेबर : एसेज इन सोशियोलॉजी. लंदनः रूटलेज एंड केगन पॉल

गिडेंस, ए. (2001).सोशियोलॉजी, फोर्थ एडं कैम्ब्रीज : पौलिटी

गिलोरी, पी. (2000).बिटवीन कैम्पसः नेशनस,कल्चर्सएंड द एल्युर ऑफ रेस. लंदनः एलन लेन, द पेंगुइन प्रेस

हॉक्सचाइल्ड, ए. ई. (1983).द मैनेज्ड हार्टः कमर्शलिज़ैशन ऑफ ह्यूमैन फीलिंग. बर्कले, कैलिफ़ोर्निया. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया प्रेस

जैमिसन, एल. (1998).इंटिमेसीः पर्सनल रिलेशनशिपस इन मॉडर्न सोसाइटीज. कैंब्रिजः पॉलिटी

जेनकिंस, आर. (1996).सोशल आइडेंटिटी. लन्दनःरूटलेज

लायन, डी. (2001).सर्विलेंस सोसाइटीः मॉनिटरिंग एवरीडे लाइफ. बकिंघमः ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस

मे, टी. (2001).सोशल रिसर्चः इश्यूज, मेथड्स एंड प्रोसेस, थर्ड एडिषन. बकिंघमः ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस

मिल्स, सी. डब्ल्यू. (1970).द सोशियोलॉजिकल इमैजिनेशन. हर्मंड्सवर्थः पेंगुइन; ओरिजनली पब्लिष्ड इन 1959

मे, टी. (1996).सिचूऐट सोशल थ्योरी? बकिंघमः ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस

नेटल्टन, एस. (1995).द सोशियोलॉजी ऑफ हेल्थ एंड इलनेस. कैंब्रिज, मास.: पोलिटी

सेगल, एल. (1999).व्हाय फेमिनिज्म? जेंडर, साइकोलॉजी, पॉलिटिक्स. कैंब्रिजः पोलिटी

स्लेविन, जे. (2000).द इंटरनेट एंड सोसाइटी. कैंब्रिज, मास.: पोलिटी

सेनेट, आर. (1998).द कोरिसन ऑफ करैक्टरः द पर्सनल कान्सक्वेन्स ऑफ वर्क इन द कैपिटलिज्म. लंदनः डब्लू. डब्लू. नॉर्टन

वाटर्स, एम. (1995).ग्लोबलाइजेषन. लंदन एंड न्यू यॉर्कः रूटलेज

विलिअम्स, एम. (2000).साइंस एंड सोशल साइंसः एन इंट्रोडक्शन. लन्दन एंड न्यू यार्कः रूटलेज.

यंग, जे. (1999).द एक्सक्लूसिव सोसाइटीः सोशल एक्सक्लूशन, क्राइम एंड डिफरेंस इन लेट मॉडर्निटी. थाउजेंड ओक्स, कैलिफ.: सेज